अनूदित साहित्य
११. कोखजाया

(आकलन)

१. (अ) परिणाम लिखिए :
(१) मौसा अचानक चल बसे - मौसी का जीवन एकाएक ठहरसा गया।

(२) दिलीप उच्च शिक्षा के लिए लंदन चला गया - तो वहीं का होकर रह गया।

(आ) कृति पूर्ण कीजिए :
(अ) बोर्ड पर लिखा वृद्धाश्रम का नाम - मातेश्वरी महिला वृद्धाश्रम

(आ) दिलीप और रघुनाथ का रिश्ता - मौसेरे भाई

(शब्द संपदा)

२. तद्धित शब्द लिखिए :-
(1) बूढ़ा - **बुढ़ापा**

(3) माता - **मातृत्व**

(2) मानव - **मानवता**

(4) अपना - **अपनापन**

(अभिव्यक्ति)

३. (अ) 'कोखजाया' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : वर्तमान भारतीय समाज में पारिवारिक व्यवस्था में बड़ी तेजी से बदलाव आ रहे हैं। निकटस्थ रिश्ते भी भावनाओं से दूर निरर्थक होते जा रहे हैं। परिवार छोटे हो गए हैं। केवल 'मैं और मेरे बच्चे' ही परिवार का हिस्सा रह गए। इस भावना के फलने-फूलने में स्त्रियों का योगदान भी कम नहीं रहा। 'मेरे पति की आमदनी पर सिर्फ मेरा और मेरे बच्चों का ही अधिकार है' वाली भावना जोर पकड़ने लगी। 'कोखजाया' कहानी का उद्देश्य आज समाज में फैलती जा रही रिश्तों की निरर्थकता को चित्रित करते हुए यह दर्शाना भी है कि प्रत्येक रिश्ते में प्यार होना जरूरी है। आज के समाज के केंद्र में धन, विलासिता सुख-सुविधाओं का स्थान सर्वोपरि हो गया है। आज की भौतिकवादी पीढ़ी में युवक

विवाहोपरांत निजी स्वार्थ में इस तरह लिप्त हो जाते हैं कि वृद्ध माता-पिता की सेवा करना तो दूर, उनकी उपेक्षा करने लगते हैं। कहानी हमें यह भी संदेश देती है कि मनुष्य की इस प्रवृत्ति को बदलना होगा और रिश्तों को सार्थकता प्रदान करनी होगी वरना हमारी महान भारतीय संस्कृति रसातल में चली जाएगी।

(आ) 'माँ के चरणों में स्वर्ग होता है', इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर : कहा जाता है कि माता के चरणों में स्वर्ग होता है। संसार का सुंदर व प्यारा शब्द है 'माँ'। इसमें कितनी मिठास भरी है। माँ का दर्जा देवताओं से भी बढ़कर है। हमने परमात्मा को नहीं देखा, भगवान को नहीं देखा। हमारी माँ हमारे लिए भगवान का ही रूप है। परमात्मा इस सृष्टि का पालन करता है, यह हम सभी जानते हैं। माता के चरणों का स्पर्श करने से बल, बुद्धि, विद्या और आयु प्राप्त होती है। कितने कष्टों को सहकर माँ बच्चे को जन्म देती है, उसके पश्चात अपने स्नेहरूपी अमृत से सींचकर उसे बड़ा करती है। माता- पिता के चरणों में स्वर्ग होता है, उनके आशीर्वाद से हमें हर क्षेत्र में सफलता मिलती है। हर कष्ट से मुक्ति मिलती है। उनका आदर और सम्मान करना हमारा सबसे पहला धर्म है। आज संसार में हमारा जो भी अस्तित्व है, जो भी पहचान है, उसका संपूर्ण श्रेय हमारे माता- पिता को ही जाता है। विवेकी पुत्र अपने माता-पिता की आज्ञा की अवहेलना करके एक कदम भी नहीं चलते। साथ ही लालच के कारण, धन के लिए माता-पिता की आज्ञा का उल्लंघन करने वालों की भी समाज में कमी नहीं है। आज आवश्यकता है मातृदेवो भव वाली वैदिक अवधारणा को एक बार पुनःप्रतिष्ठित करने की। तभी भारतीय समाज अपनी प्राचीन गरिमा को प्राप्त कर सकेगा।

(पाठ पर आधारित लघूत्तरी प्रश्न)

४. (अ) मौसी की स्वभावगत विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर : स्नेही : मौसी बड़ी स्नेही थीं। उन्होंने अपने पिता से मिली संपत्ति जबरन अपनी छोटी बहन को सौंप दी। लेखक की पढ़ाई-लिखाई में भी मौसी का योगदान था।

निरभिमानी : मौसी के पति प्रसिद्ध आई ए एस अधिकारी थे। वे हमेशा बड़े-बड़े पदों पर आसीन रहे। गुजरात में जिलाधिकारी रहे। अंत में भारत सरकार के वित्त सचिव के पद से रिटायर हुए थे। परंतु मौसी को कभी भी अपने पति के पद या पावर का घमंड नहीं हुआ।

भावुक हृदया : मौसी बहुत भावुक हृदय की स्वामिनी थीं। एक बार उनके नैहर के गाँव में भयंकर अकाल पड़ा। लोगों के हाहाकार और दुर्दशा से द्रवित होकर उन्होंने अपनी ससुराल से सारा जमा अन्न मँगवाया। आवश्यकतानुसार खरीदवाया भी। और पूरे गाँव के लिए भंडारा खुलवा दिया।

स्वाभिमानी : मौसी सरल हृदया थीं परंतु बड़ी स्वाभिमानी थीं। उनके एकमात्र पुत्र ने धोखे से उनकी सारी संपत्ति औने-पौने दामों में बेच दी। मौसी ने भारी हृदय से उस धोखे को भी आत्मसात कर लिया। परंतु वही पुत्र उन्हें एयरपोर्ट पर अकेले, निराश्रित छोड़कर चला गया। उसने एक बार भी यह नहीं सोचा कि माँ का क्या होगा, वह कहाँ जाएगी? तब मौसी ने वृद्धाश्रम में रहना उचित समझा। लोकलाज के भय से बेटा परिवार के साथ आया अवश्य, पर उनके छटपटाने, गिड़गिड़ाने के बावजूद मौसी ने मिलने से मना कर दिया, उनका मुँह तक नहीं देखा।

(आ) 'मनुष्य के स्वार्थ के कारण रिश्तों में आई दूरी', इसपर अपना मंतव्य लिखिए।

उत्तर : मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। रिश्ते सामाजिक संबंधों का आधार हैं। संस्कारों की कमी, निहित स्वार्थ और भौतिकवादी सोच व्यक्ति को क्रूर बना रहे हैं। पैसों की होड़, मनुष्य के निजी स्वार्थ के कारण पारिवारिक रिश्तों में काफी गिरावट आई है। दो लोगों के बीच में पारस्परिक हितों का होना, बनना और बढ़ना रिश्तों को न केवल जन्म देता है, बल्कि एक मजबूत नींव भी प्रदान करता है। जैसे ही पारस्परिक हित निजी हित या स्वार्थ में बदल जाता है रिश्तों में ग्रहण लगना शुरू हो जाता है। पारस्परिक हित में अपने हित के साथ-साथ दूसरे के हित का भी समान रूप से ध्यान रखा जाता है।

(साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान)

५. जानकारी लिखिए:
(अ) 'कोखजाया' कहानी के हिंदी अनुवादक का नाम -

उत्तर : बैद्यनाथ झा।

(आ) कहानी विधा की विशेषता -

उत्तर : कहानी विधा में जीवन में किसी एक अंश अथवा प्रसंग का वर्णन मिलता है। कहानियाँ अपने प्रारंभिक काल से ही सामाजिक बोध को व्यक्त करती है। समाज के बदलते मूल्यों, विचारों और दर्शन ने सदैव कहानियों को प्रभावित किया है। कहानियों के द्वारा हम किसी भी काल की सामाजिक, राजनीतिक दशा का परिचय आसानी से पा सकते हैं।

६. (अ) निम्न उपसर्गों से प्रत्येक के तीन शब्द लिखिए :

(१) अति - क्रमण : अतिक्रमण, अतिरिक्त, अतिशय।

(२) नि - कृष्ट : निकृष्ट, निवास, निषेध।

(३) परा - काष्ठा : पराकाष्ठा, पराजय, पराजय।

(४) वि - संगति : विसंगति, विदेश, विवाद।

(५) अभि - भावक : अभिभावक, अभिनव, अभिमान।

(६) प्र - स्थान : प्रस्थान, प्रगति, प्रबल।

(७) अ - विवेक : अविवेक, अधर्म, असत्य।

(८) **अध - पका : अधपका,** अधबना, अधजला।

(९) **भर - पूर : भरपूर,** भरपेट, भरसक।

(१०) **कु - पात्र : अपात्र,** कर संगत, कुप्रथा।

(आ) निम्न प्रत्यय से प्रत्येक के तीन शब्द लिखिए :
(१) **आ - प्यास : प्यासा,** प्यारा, दुलारा।

(२) **इया - पूरब : पुरबिया,** घटिया, उड़िया।

(३) **ई - ज्ञान : ज्ञानी,** विदेशी, गुजराती।

(४) **ईय - भारत : भारतीय,** शासकीय, राजकीय।

(५) **ईला - भड़क : भड़कीला,** रसीला, रंगीला।

(6) **ऊ - ढाल : ढालू,** चालू, रट्टू।

(७) **मय - जल : जलमय,** ज्ञानमय, संगीतमय।

(८) **वान - गुण : गुणवान,** भाग्यवान, दयावान।

(९) **वर - नाम : नामवर,** ताकतवर, प्रियवर।

(१०) **दार - धार : धारदार,** जमींदार, दुकानदार।